School of Humanities

Certificate

I hereby declare that the short synopsis

''कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री की नयी अवधारणाः एक अध्ययन''

being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in HINDI under school of Humanities of U.P. Rajarshi Tandon open University, Prayagraj during the academic year 2023-24

It is bonafide record of original work carried out under the supervision of prof. Ruchi Bajpai and has not been submitted in full or part to any other University or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsisis plagiarism free and the report has been submitted.

Priti Singh

En. No.-2201304

Research Supervisor:-

Prof. Ruchi Bajpai (Faculty of HINDI)

Prof. Satyapal Tiwari

Director of School of Humanities

18/07/25

Prof. P.K. Pandey (Director, R&D Cell)

"कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री की नयी अवधारणाः एक अध्ययन"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI
to
U.P. Rajarshi Tandon open university, Prayagraj

by
Priti Singh
En. No.-2201304

Under the Supervision of
Prof. Ruchi Bajpai
Faculty of Hindi

School of Humanities
U.P. Rajarshi Tandon open University
Shantipuram (Sector-f) Phaphamau, Prayagraj-211021

Priti Singh

ABSTRACT:-

"साहित्य समाज का दर्पण है।"

(डॉ० श्यामसुन्दर दास)

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। क्योंकि समाज की गतिविधियों से साहित्य प्रभावित होता है।साहित्य में स्त्री के विभिन्न रूपों के दर्शन हुए हैं, इनमें से कुछ पारंपरिक रहे हैं तो कुछ स्वतन्त्र भी। स्त्री को कहीं अबला, कहीं अतिव्यथित, अति पीड़ित तथा कहीं पर अति विद्रोही दिखाया गया है। इस तरह से कई बार स्त्री एक सरल सामाजिक मनुष्य की तरह नहीं बल्कि कई आरोपित रंगों की ओढ़नी ओढ़े दिखाई दे जाती है। वर्तमान समाज में स्त्री के कई रूपों के दर्शन होते हैं, उनमें से कुछ अति उन्मुक्त, अति विद्रोही अथवा अति व्यथित आदि। जबकि इन सभी रूपों के अलावा भी उसका अपना एक अलग रूप है और वह है उसका वास्तविक रूप। ज्ञानपीठ पुरस्कृत लेखिका कृष्णा सोबती के उपन्यासों में वर्णित स्त्री–चरित्र अपनी पीड़ा तथा यौन इच्छाओं तक बिल्कुल सहज, स्वाभाविक तथा मौलिक रुप में दिखाई देते हैं। समकालीन लेखिकाओं की स्त्री की भाँति कृष्णा सोबती की स्त्री मातृत्व को बोझ अथवा बंधन नहीं मानती। इसी से वर्तमान स्त्री–विमर्श में आजादी की राह पर चलने वाली स्त्रियों से ज्यादा विश्वसनीय है कृष्णा सोबती के स्त्री–चरित्र। मित्रो के रूप में हिंदी उपन्यास में पहली बार एक ऐसे स्त्री–पात्र की सृष्टि हुई है, जिसमें देह धर्म के उफनते ज्वार के सहज स्वीकार की सम्पूर्ण साहसिकता है। 'मित्रो मरजानी' में उन्होंने एक अनूठा अपने किस्म का स्त्रीवाद लिखा है। कृष्णा सोबती हिंदी साहित्य–जगतकी प्रख्यात कथाकार हैं। मुख्यतः उन्होंने अपने लेखन में स्त्री

Pritisingh

चरित्र को महत्व दिया तथा स्त्री–चित्रण को जिस खुलेपन से चित्रित किया वह अपने आप में एक अद्वितीय साहस एवं उपलब्धि है।

Keyword:-साहित्य स्वाभाविक व्यथित, उन्मुक्त, मातृत्व, विश्वसनीय, स्त्रीवाद, प्रख्यात, अद्वितीय, उपलब्धि।

CONTENTS

S.N.	Description	Page No.
1.	Introduction	5-6
2.	Literature Review	7
3.	Description Broad Area	8
4.	Objectives of the Study	8
5.	Research Methodology	8
6.	Expected Outcome of the Research	9

References 9-11

Plagiarism Report

Priti Singh

1. Introduction

ज्ञानपीठ पुरस्कृत लेखिका कृष्णा सोबती ने उपन्यास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कामयाबी हासिल की है। परंपरा एवं रूढ़ियों को तोड़ती हुई अपने स्वातंत्र्य के लिए जूझती, कभी सफल तो कभी असफल होती, नवीन मूल्यों को ग्रहण करने में सचेष्ट स्त्री का जो रुप इनके उपन्यासों में उभरकर आया है, वह वास्तव में अनूठा है। आज के संघर्षशील यथार्थवादी युग में जीने वाली स्त्री को सोबती जी ने केवल भावना के बहाव में बहने वाली स्त्री के रूप में चित्रित न करके, स्वाभिमान औरसमता की चाह से उद्वेलित स्त्री का चित्र प्रस्तुत किया है।

साहित्य में स्त्री के विभिन्न रूपों के दर्शन हुए हैं, उनमें से कुछ पारंपरिक रहे हैं तो कुछ स्वतन्त्र भी। स्त्री को कहीं अबला, कहीं अति व्यथित, अति पीड़ित तथा कहीं पर अति विद्रोही दिखाया गया है। इस तरह से कई बार स्त्री एक सरल, सामाजिक मनुष्य की तरह नहीं बल्कि कई आरोपित रंगों की ओढ़नी ओढ़े दिखाई दे जाती है। किन्तु इन सभी आरोपित रूपों से अलग भी उसका एक रूप है और वह है अपने वास्तविक रूप में। अपनी सामान्य आकांक्षाओं, दुर्बलताओं, संवेदनशीलता, करूणा के साथ और स्वतन्त्रमना। एक स्त्री अपने उसी सहज तथा पारंपरिक रूप में रहना चाहती है जैसी वह वास्तव में है और जिस रूप को स्वीकार करने का वह साहस रखती है। कृष्णा सोबती के स्त्री–चरित्र अपनी पीड़ा तथा यौन–इच्छाओं तक बिल्कुल सहज, स्वाभाविक तथा मौलिक रूप में दिखाई देते हैं। 'डार से बिछुड़ी' नामक लघु उपन्यास से कृष्णा सोबती का उपन्यास लेखन आरम्भ होता है। इस उपन्यास में पाशो के माध्यम से स्त्री–जीवन की जिस विवशता और असहाय स्थिति का वर्णन किया गया है, वह पाठकोंको करुणासिक्त किए बिना नहीं रहता।

Priti Singh

कृष्णा सोबती अपनी लम्बी कहानी 'मित्रो मरजानी' जिसे लघु उपन्यास भी कहा गया है के प्रकाशन के साथ सहसा चर्चित हो उठी थीं। 'मित्रो' के रूप में हिंदीउपन्यास में पहली बार एक ऐसे स्त्री–पात्र की सृष्टि हुई है जिसमें देह धर्म के उफनते ज्वार के सहज स्वीकार की संपूर्ण साहसिकता है।

''सूरजमुखी अँधेरे के'' लघु उपन्यास बलात्कार की पीड़ा के बाद उत्पन्न हुई मानसिक स्थिति का दस्तावेज है। यह उपन्यास आदर्शों की भव्यरूपता से अलग हटकर यथार्थ और सत्य के निरूपण की वह असाधारण शाश्वत कथा है जिसका सत्य न कभी झुकता है न मरता है।

'जिन्दगीनामा' सोबती जी का सबसे चर्चित तथा विवादास्पद उपन्यास है। 'जिन्दगीनामा' का कथानक किसान के खेतों की तरह विस्तृत, सीधा सादा तथा जमीन से जुड़ा हुआ है। 'जिन्दगीनामा' उपन्यास भारतीय गॉवो कि उस जीवन्तं परम्परा का चित्रण है जहॉ भारतीय जन मानस का समग्र जीवन दर्शन अपनी मस्ती में ही जीता चला जाता है।

'ऐ लड़की' सोबती जी की एक लंम्बी कहानी । 'ऐ लड़की' के माध्यम से सोबती जी ने जिस जीवन सत्य को उभारने का प्रयास किया है, वह हर एक स्त्री की शाश्वत कथा है।

कृष्णा सोबती का 'दिलो–दानिश' उपन्यास पितृसत्तात्मक समाज की सामंती रवायतों में स्त्री की सामाजिक हैसियत का खुलासा है।

'समय सरगम' उपन्यास की केन्द्रीय संवेदना मृत्युबोध है–लेकिन आतंक नहीं। 'समय सरगम' उपन्यास में सोबती जी ने पुरानी तथा नई सदी के दो–दो छोरों को समटने का प्रयास किया है। समय सरगम उपन्यास जीवनानुभवों की तटस्थता और सामाजिक परिवर्तनों से उभरा हुआ एक अद्भुत तथा अनूठा उपन्यास है।

Priti singh

कृष्णा सोबती जी के रचना–प्रसंग में यह बात बार–बार दुहराई जाती है कि उनका कम लिखना दरअसल विशिष्ट लिखना है। मुख्यतः उन्होंने अपने लेखनमें स्त्री–चरित्र को महत्व दिया तथा स्त्री–चित्रण को जिस खुलेपन से चित्रित किया वह अपने आप में एक अद्वितीय साहस एवं उपलब्धि है।

2. Literature Review:-

शोधार्थी ने विभिन्न अंतर्जालीय स्त्रोतों के माध्यम से पूर्व में हुए शोध कार्यो का अध्ययन किया। जिसका विवरण निम्नलिखित है–

- कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में नारी एक अनुशीलन–2019 शोधार्थी–रक्षा बहन बसावां, हिंदी भाषा–साहित्य विभाग, गुजरात, विद्यापीठ

  शोध–निर्देशक–डॉ० शशि पंजाबी, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुजरात विद्यापीठ
- कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी समस्याएँ–2014 वीर नर्मद गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत

  शोधार्थी– योगिता छगनभाई पटेल

  निर्देशिका – डॉ० विमलेश ए तेवतिया

3. Description Broad Area:-

कृष्णा सोबती हिन्दी साहित्य–जगत की प्रख्यात कथाकार हैं। लेखन का आरंभ उन्होंने कविता से किया था। तदुपरान्त उन्होंने अपनी लेखनी कथा–साहित्य में चलाई, जिसमें इन्हें अन्यतम सफलता प्राप्त हुई। शोधार्थी द्वारा कृष्णा सोबती के उपन्यासों में उपन्यास साहित्य की महत्ता और उपयोगिता का शोधात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा।

4. Objectives of the Study:-

कृष्णा सोबती का कम लिखना दरअसल विशिष्ट लिखना है। वह स्त्री चेतना के कई नवीन स्वरूपों का उद्‌घाटन अपने उपन्यासों के माध्यम से करती

Pritisingh

हैं। शोधार्थी द्वारा कृष्णा सोबती के उपन्यासों में व्यक्त स्त्री–पात्रों के माध्यम से समाज को स्त्री की नयी अवधारणा के प्रति सहृदय तथा संवेदनशील बनाने की दिशा में प्रयास किया जाएगा। कृष्णा सोबती के उपन्यासों के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर स्त्री के जीवन–स्तर में आए सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों का अध्ययन किया जाएगा।

5. Research Methodology:-

सामग्री संकलन हेतु सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया जाएगा तथा शोध कार्य में विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक और ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। इसके अलावा वर्गीकरण, निष्कर्ष तथा अन्य संदर्भों में तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा।

6. Expected outcome of the Research:-

वस्तुतः कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यास में स्त्री–जीवन उसकी समस्याएँ, उसके उत्पीड़न को विभिन्न पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। इनके उपन्यासों में कहीं स्त्री विधवा जीवन जीने के लिए विवश है तो कहीं कर्जा चुकाने हेतु उसे बेच दिया जाता है यदि वर्तमान समाज का गहराई से मूल्यांकन करें तो ये समस्याएँ काफी जटिल रूप में आज भी मौजूद हैं। यदि कृष्णा जी के उपन्यासों का गहन रूप से अध्ययन किया जाएगा तो सदियों से चले आ रहे स्त्री के प्रचलित परम्परागत स्वरुप के प्रति सोबती जी का वैचारिक प्रतिरोध साहित्य और समाज को एक नई दिशा देने में सक्षम होगा।

References:-

मूल ग्रंथ–

- डार से बिछुड़ी, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- मित्रो मरजानी कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- सूरजमुखी अंधेरे के कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- जिन्दगी नामा, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

Pritisingh

- दिलो दानिश, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- समय–सरगम कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- यारों के यार, तिन पहाड कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- ऐ लड़की, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

सहायक गंथः–

- आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ० बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज
- कृष्णा सोबती की जीवनी, दूसरा जीवन, गिरधर राठी, सेतु प्रकाशन, नोएडा
- छविल कुमार मेहेर, कृष्णा सोबती एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स दिल्ली
- रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखनः स्वप्न और संकल्प, राजकमल प्रकाशन दिल्ली
- जैनेन्द्र कुमार नारी, पूर्वोदय प्रकाशन
- गरिमा श्रीवास्तव कृष्णा सोबतीकृत, ऐ लड़की में नारी चेतना श्री सोमनाथ दल, संजय प्रकाशन
- हिन्दी का गद्य साहित्य, डॉ० रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- उमा शुक्ल, भारतीय नारी अस्मिता की पहचान, लोकभारती प्रकाशन
- गोपालराय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन
- स्त्री–मुक्ति की सामाजिकी, अनामिका, राजकमल प्रकाशन
- स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ, रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन
- परिधि पर स्त्री, मृणाल पाण्डे, राधाकृष्ण प्रकाशन
- महिलालेखन के सौ वर्ष, ममता कालिया, लोकभारती प्रकाशन

पत्रिकाएँः–

- कृष्णा सोबती के रचना संसार में स्त्री, पिट्सबर्ग, अमेरिका

Rititsingh

Ph

- कृष्णा सोबती का उपन्यास, आधुनिक महिला को परिभाषित करना, एलसा थॉमस
- स्त्री के अस्तित्व की लड़ाई लड़ने वाली महत्वपूर्ण लेखिका, कृष्णा सोमती, हितेश कुमार सिंह, प्रयोगपथ

डॉ० एम० फिरोज अहमद, वाङमय त्रैमासिक, अलीगढ़

Preitisingh

DrillBit

DrillBit Similarity Report

0 SIMILARITY %

1 MATCHED SOURCES

A GRADE

A-Satisfactory (0-10%)
B-Upgrade (11-40%)
[illegible]
D-Unacceptable (61-100%)

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Paper Submitted to Bhupendra Narayan Mandal University, Madhepura	<1	Student Paper

Preetisingh

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language **Hindi**

Submission Information

Author Name	Priti Singh
Title	Krishna Sobti ke Upanyason me..
Paper/Submission ID	4105459
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-07-18 13:15:13
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **0%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Priti Singh